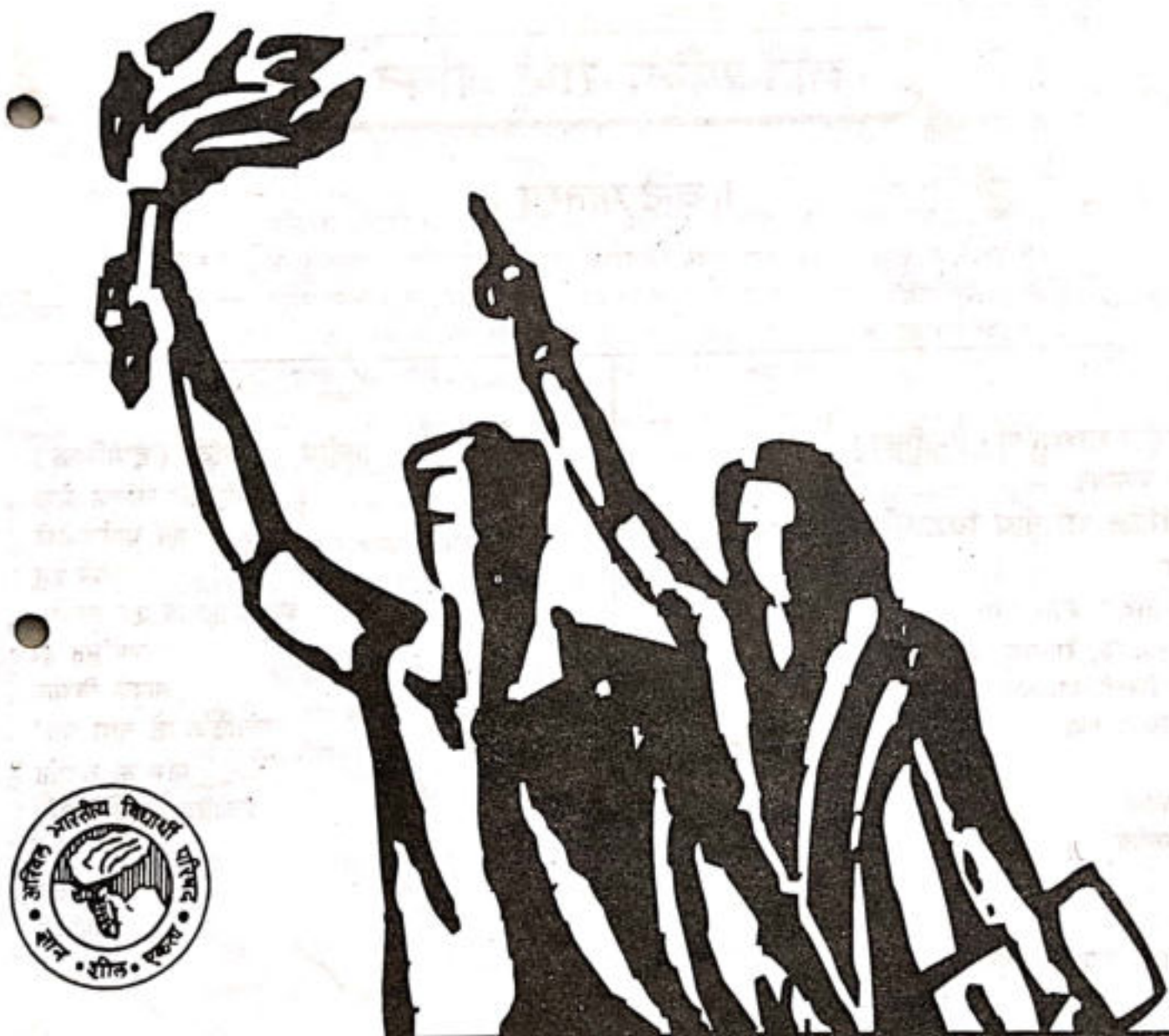


# राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र का प्रतिनिधि मासिक

वर्ष : 24 अंक : 1

जुलाई 2001



अरिवल भारतीय विद्यार्थी परिषद्  
दिल्ली प्रदेश

ज्ञान!

शील!!

छात्र शक्ति

एकता!!!

# अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्

भारत का अग्रमान्य छात्र संगठन जो विश्व की प्राचीनतम सभ्यता को  
वैश्विक समुदाय में गरिमापूर्ण स्थान प्राप्त कर एक शक्तिमान, समृद्धशाली  
एवम् स्वाभिमानी राष्ट्र के रूप में पुनर्निर्माण करने के भव्य लक्ष्य से प्रतिबद्ध है।

## छात्र शक्ति-राष्ट्र शक्ति

॥ वन्दे मातरम् ॥

राष्ट्रीय छात्रशक्ति ( द्वैमासिक )  
का प्रकाशन  
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्  
द्वारा  
अभाविव कार्यालय  
16/3676, रंगपुरा, करोलबाग,  
नई दिल्ली-110005  
से किया गया

संपादक  
आशुतोष

मुद्रक  
श्रीराम एण्टरप्राइजेज  
एम-71, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

राष्ट्रीय छात्रशक्ति ( द्वैमासिक )  
को और अधिक श्रेष्ठ  
एवं छात्रोपयोगी  
बनाने हेतु  
आपके सुझाव एवं सहयोग  
अपेक्षित है।  
आपके विचार  
'संपादक के नाम पत्र'  
स्तंभ के अंतर्गत  
प्रकाशित किये जायेंगे।

भवदीय  
संपादक



## सम्पादकीय

‘राष्ट्रीय छात्र शक्ति’ विद्यार्थियों की वर्तमान पीढ़ी के लिये नया नाम हो सकता है परंतु शिक्षा क्षेत्र के लिये यह नया नहीं है। वर्षानुवर्ष इसने दिल्ली और देश के परिसरों में विद्यमान छात्र समुदाय और शिक्षक वर्ग को परस्पर तथा अपने से जोड़े रखा है।

शिक्षा क्षेत्र के अनेक ज्वलंत मुद्दों पर बहस खड़ी करने का गौरव जहाँ इसे प्राप्त है वहीं समाज में चल रहे रचनात्मक सद् प्रयासों से छात्र समुदाय को परिचित कराने का कार्य भी इसने किया है। प्रशासन में व्याप्त अनियमितताओं और भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करने का साहस भी राष्ट्रीय छात्र शक्ति ने निरंतर प्रदर्शित किया है।

कतिपय कारणों से कुछ समय तक ‘राष्ट्रीय छात्र शक्ति’ का प्रकाशन संभव नहीं हो सका। परंतु इसके कारण उत्पन्न शून्य ने इसकी प्रासंगिकता को रेखांकित ही किया है। पिछले कुछ समय से परिसरों में शिक्षा क्षेत्र के विभिन्न घटकों के मध्य संवाद को प्रभावी बनाये जाने की आवश्यकता तीव्रता से अनुभव की जा रही थी जिसने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् को राष्ट्रीय छात्र शक्ति के पुनः प्रकाशन हेतु प्रेरित किया।

राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस (9 जुलाई) का यह अवसर परिसरों में नये विद्यार्थियों के स्वागत का भी अवसर है और नये शैक्षिक वर्ष हेतु नये संकल्प धारण करने का भी। गत पाँच दशकों से देश के परिसरों में चल रहे शिक्षा क्षेत्र में राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के रचनात्मक आन्दोलन के माध्यम तथा सामाजिक आलोचक, सामाजिक दण्डशक्ति व सामाजिक हित प्रहरी के रूप में बहुमुखी छात्र सक्रियता में अपनी आस्था को पुनर्अभिव्यक्त करने का अवसर है।

विश्वास है कि इस अवसर पर प्रारंभ होने वाली यह पत्रिका अपने नये कलेवर में अपनी भूमिका को सार्थक सिद्ध कर सकेगी तथा शिक्षा समुदाय का विश्वास अर्जित करने में सफल होगी।



## परिसर परिक्रमा

### प्रवेश सूचना केन्द्र

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, दिल्ली प्रदेश द्वारा एस.एस. आई. कम्प्यूटर संस्थान के साथ मिलकर दिल्ली विश्वविद्यालय के स्नातक कक्षा में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की सहायता के लिए 6 जून, 2001 से 20 जून, 2001 तक 27 स्थानों पर प्रवेश सूचना केन्द्र लगाये गये।

इन सूचना केन्द्रों से सवा दो लाख केन्द्रीयकृत फार्म, 45,000 निःशुल्क प्रवेश पुस्तिकाएँ, 50,000 कट ऑफ लिस्ट वितरित किये गये। इस बार हेल्पलाइन (दूरभाष) की व्यवस्था शुरू की गई, जिस पर विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में प्रवेश से संबंधित सूचनाएँ प्राप्त कीं। विद्यार्थी परिषद् दिल्ली प्रांत की website: www.abvpdelhi.org पर भी प्रवेश से संबंधित जानकारी विद्यार्थियों को उपलब्ध करायी गयी। सचल सूचना केन्द्र भी चलाये गये। दो केन्द्रों पर कम्प्यूटर से भी जानकारी दी गयी।

### LL.B. CRASH COURSE

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, कैम्पस विभाग द्वारा LL.B. प्रवेश परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों के लिए 11 जून, 2001 से 21 जून, 2001 तक Crash Course का आयोजन किया गया। निबंधन शुल्क 100 रुपये था। इसमें कुल 145 विद्यार्थियों ने भाग लिया और परीक्षा की तैयारी हेतु उचित मार्गदर्शन प्राप्त किया। विद्यार्थियों के लिए TEST का भी आयोजन किया गया, जिसमें

अच्छा परिणाम सामने आया।

कैम्पस विभाग द्वारा पिछले 5 वर्षों से LL.B. Crash Course का आयोजन लगातार किया जा रहा है। इसमें पचास प्रतिशत से ज्यादा छात्र उत्तीर्ण होते रहे हैं। विधि के क्षेत्र में क्या-क्या संभावनाएँ हैं, इसकी जानकारी भी विद्यार्थियों को दिया जाता है।

इस बार के Crash Course की यह विशेषता रही कि अध्यापन अपने परिषद् के कार्यकर्ता, जो विधि के छात्र हैं, द्वारा किया गया।

### 9 जुलाई, विद्यार्थी दिवस

9 जुलाई, 2001 को विद्यार्थी दिवस पर दिल्ली प्रांत में 4 स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किये गये। उत्तरी परिसर विभाग द्वारा सांस्कृतिक गोष्ठी आयोजित की गयी, जिसमें प्रसिद्ध गजल गायिका मधु जी एवं राजीव वालिया जी ने गीत गाकर उपस्थित विद्यार्थियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसमें 79 विद्यार्थी उपस्थित रहे।

दक्षिणी परिसर विभाग द्वारा आयोजित नये-पुराने कार्यकर्ता सम्मेलन में 50 कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कालका जी विभाग द्वारा वन-विहार के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इसमें 55 (पचपन) कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

नई दिल्ली विभाग द्वारा Career Counselling के कार्यक्रम आयोजित हुए जिसमें 12वीं कक्षा के 160 विद्यार्थियों ने शिक्षा क्षेत्र के विभिन्न पाठ्यक्रमों के बारे में जानकारी दी गयी।

### आह्वान

- ♦ क्या आप देश की वर्तमान दशा पर चिन्तित हैं?
- ♦ क्या जड़ से शिखर तक व्याप्त भ्रष्टाचार आपको उद्धेलित करता है?
- ♦ क्या सामाजिक विषमता का विद्रूप आपको विक्षुब्ध करता है?
- ♦ क्या आपको लगता है कि यह सड़ी-गली, बीमार व्यवस्था बदल दिये जाने का समय आ गया है?
- ♦ क्या आपका दृढ़ विश्वास है कि यह परिवर्तन लाने में छात्र-युवा ही सक्षम हैं?
- ♦ क्या आप इसकी पहल अपने आप से करने को तैयार हैं?

यदि हाँ, तो राष्ट्रीय छात्रशक्ति आपका आह्वान करती है। आवश्यकता है जनजागरण के निरंतर अभियान की, देश के छात्र-युवाओं को अपने साथ जोड़ने की, संवाद स्थापित करने की। परिवर्तन के इस सर्जनात्मक अभियान में आपका योगदान अपेक्षित है।

अपने क्षोभ को शब्द दीजिये और विश्वास कीजिये,

**आपमें क्षमता है कलम की नोंक से दुनियाँ का रुख बदलने की**

अपने विचारों को साहित्य की किसी भी विधा में शब्द दें तथा संपादक, राष्ट्रीय छात्रशक्ति, द्वारा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, 16/3676, रैगरपुरा, करौलबाग नई दिल्ली-110005 को प्रेषित करें।



## छात्रशक्ति-राष्ट्रशक्ति

किसी समाज, देश अथवा राष्ट्र के सार्वजनिक जीवन में जहाँ एक ओर विविध मान्यताएँ, विचारधाराएँ एवं जीवन मूल्य अमूर्त रूप में अपनी भूमिका निभाते हैं वहीं उन्हें मूर्त रूप में व्यक्त करने वाली अनेक संस्थाएँ अथवा संगठन एवं प्रमुख व्यक्ति भी अपनी भूमिका निभाते हैं।

ऐसी सभी मान्यताएँ, विचारधाराएँ, मूल्य, संगठन एवं व्यक्ति समाज जीवन को दिशा देने का प्रयास करते हैं तथा सार्वजनिक जीवन में अपना विशिष्ट प्रभाव निर्माण करते हैं। यह भी होता है कि इनमें से कुछ तत्वों का समाज जीवन पर गहरा और व्यापक प्रभाव होता है जबकि कुछ का प्रभाव सामान्य और सीमित रहता है। सार्वजनिक जीवन ऐसे सभी प्रभावों के अनुसार चलता रहता है।

समाज जीवन को दिशा देने वाले विभिन्न तत्वों में एक श्रेणी होती है सार्वजनिक संस्थानों अथवा संगठनों की। समाज जीवन की विभिन्न गतिविधियों उदाहारणार्थ राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि तथा आयु, वर्ग, लिंग, जाति, व्यवसाय आदि के आधार पर भी वे निर्मित होते हैं। सामूहिक हितों, संदर्भों अथवा वर्गीकरण के आधार पर संगठनों के और भी कई प्रकार होते हैं अथवा हो सकते हैं।

संगठनों की श्रेणी में छात्र संगठन भी आते हैं। विश्व में अथवा भारत में छात्र संगठन कब से बनने लगे और समाज जीवन में छात्रों की अथवा छात्र संगठनों की क्या भूमिका रही यह एक उत्सुकता एवं शोध का विषय हो सकता है। परन्तु छात्रों की भूमिका के संबंध में यदि हम बीसवीं शताब्दी के कुछ उदाहरणों पर दृष्टि डालें तो विभिन्न देशों में पश्चिमी उपनिवेशवाद के विरुद्ध हुए राष्ट्रवादी संघर्षों में विद्यार्थी भी क्रिय रूप से सहभागी दिखाई देते हैं। भारत में महात्मा गान्धी के आह्वान पर हजारों छात्रों ने सरकारी शालाएँ छोड़ दीं। फौसी पर चढ़े बहुतांश क्रांतिकारी छात्र थे। पूरे स्वाधीनता आन्दोलन में छात्र सहभाग लक्षणीय था।

यदि हम छात्र संगठनों के निर्माण के संबंध में भारत के ताजा इतिहास पर नजर डालें तो दिखाई देता है कि प्रायः राजनीतिक दलों की छात्र शाखाओं के रूप में ही संगठन अस्तित्व में आये और उसी भूमिका हेतु वे सक्रिय बने। किन्तु इनमें एक अपवाद भी निर्मित हुआ। स्वाधीनता प्राप्ति के तुरन्त पश्चात् 1948 में जन्म लेने वाला छात्र संगठन 'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्' एक अलग प्रकार के संगठन के रूप में देश में उभरा।

लीक से हटकर स्वतंत्र एवं मौलिक रूप से कार्य करने

वाला विशिष्ट एवं अद्वितीय संगठन है अभाविप। कोई छात्र संगठन अपने आप में पूर्ण और अर्थवान हो सकता है इसका उदाहरण है अभाविप। स्वाधीन भारत के जीवन में जिन्होंने सार्थक एवं प्रभावी भूमिका निभाई है और आज भी निभा रहे हैं उन संगठनों में से एक है अभाविप।

'छात्रशक्ति-राष्ट्रशक्ति' उद्घोष अथवा संकल्पना अभाविप ने ही देश के सामने प्रस्तुत की है। यह संकल्पना अभाविप के संपूर्ण चिंतन का सार भी है और उसके प्रयत्नों का लक्ष्य भी। अभाविप की सारी सार्थकता इस संकल्पना में समाहित है।

दल और सत्ता की राजनीति से ऊपर

राष्ट्रजीवन में राजनीति अनेक सामाजिक गतिविधियों में से एक होती है न कि एकमात्र और समाज जीवन को सुचारु रूप से चलाने में राज्य, सत्ता और राजनीति की भूमिका महत्वपूर्ण होती है परन्तु उसकी एक सीमा होती है। इसलिये न तो यह वांछनीय है और न ही आवश्यक कि सभी सामाजिक गतिविधियाँ सत्ता अथवा राजनीति पर निर्भर रहें अथवा उनके द्वारा संचालित हों।

स्थापना एवं आयाम विस्तार

1947 में जब देश आजाद हुआ तब स्वाभाविक ही राष्ट्रभक्त एवं विचारशील लोगों ने इस बात को पहचाना कि देश की प्रगति के लिये चहुँमुखी प्रयास करने होंगे तथा इस प्रयास में अनेकों व्यक्तियों, संगठनों, सामाजिक वर्गों व सरकार की शक्ति लगनी होगी। सामाजिक वर्गों में एक वर्ग विद्यार्थियों का भी था। राष्ट्रनिर्माण में इस वर्ग की शक्ति के नियोजन हेतु अभाविप की स्थापना हुई। स्थापना का कार्य कुछ राष्ट्रवादी विद्यार्थियों व शिक्षकों ने मिलकर किया। यद्यपि संस्थापकों को राष्ट्रनिर्माण का अपना उद्देश्य स्पष्ट था किन्तु उसे प्राप्त करने का मार्ग उन्हें खोजना पड़ा। यह मार्ग उन्होंने अनेक प्रयत्नों एवं अनुभवों से खोजा और इसमें समय भी लगा। चूंकि संगठन की स्थापना राष्ट्रनिर्माण हेतु हुई थी और निर्माण एक सकारात्मक कार्य होता है इसलिये सकारात्मक अर्थात् रचनात्मक गतिविधियों से परिषद् का कार्य प्रारंभ हुआ।

परन्तु सामाजिक जीवन में समाजहित विरोधी व नकारात्मक तत्व भी रहा करते हैं जिनके कारण समस्याएँ एवं कठिनाइयाँ सामने आती हैं इसलिये परिषद् ने उनके निराकरण हेतु प्रयत्न करने एवं आवश्यकतानुसार आंदोलन करने को भी अपना



कार्य माना। परिषद् का कार्य महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में प्रारंभ हुआ था तथा कई महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में छात्रसंघों के चुनाव होते थे तो परिषद् ने छात्रों को योग्य नेतृत्व प्रदान करने हेतु छात्रसंघ चुनावों में भी भाग लेना प्रारंभ किया। इस प्रकार अभाविप का मार्ग व गतिविधियाँ आकार लेने लगे।

### छात्र सक्रियता का दशक

1960 का दशक भारत व पूरे विश्व में छात्र सक्रियता का सबसे महत्वपूर्ण दशक था। दशक का उत्तरार्ध आते-आते भारत स्वाधीनता के बीस वर्ष पूरे कर चुका था। तीन पंचवर्षीय योजनाएँ पूरी हो चुकी थीं। शैक्षिक, राजनीतिक व आर्थिक क्षेत्रों में वैसी प्रगति नहीं हुई जिसकी अपेक्षा की गई थी। भारत में कई प्रकार के असंतोष व्याप्त थे जिनसे विद्यार्थी भी प्रभावित हुए। उन वर्षों में भारत में कई तरह के छात्र आन्दोलन हुए।

विश्व के दूसरे भागों में भी हलचलें तेज थीं। ऐसे वातावरण में कई देशों में छात्र सक्रियता ने प्रमुख भूमिका निभाई। इंडोनेशिया और फ्रांस में छात्र आन्दोलनों के कारण सत्ता परिवर्तन हुए। अमरीका में विश्वविद्यालयों की निर्णय प्रक्रिया में छात्रों के सहभाग की जोरदार मांग हुई। हालैण्ड में वहाँ की राजकुमारी के एक नाजी के साथ विवाह का प्रचण्ड विरोध हुआ। कुछ अन्य देशों में भी विभिन्न मुद्दों पर छात्र आन्दोलन हुए। आंदोलनों के इस दौर में अभाविप लगभग बीस वर्ष पुराना संगठन हो गया था। वह कुछ आंदोलनों का प्रेरक था तो कुछ में वह भागीदार भी बना।

### छात्र आज का नागरिक

छात्रों की समाज जीवन में सार्थक एवं प्रभावी भूमिका को आकार देने का प्रयत्न अभाविप कर रही थी। उसने तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था की स्थिति, राजनीतिक व सामाजिक परिस्थिति, अपने 20-22 वर्ष के अनुभवों, देश-विदेश के छात्र आन्दोलनों के उदाहरणों तथा उस संबंध में व्यक्त किये गये सिद्धांतों व विचारों के अध्ययन तथा छात्र समुदाय, विशेषकर महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की वर्ग विशेषताओं के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि छात्र कल का नहीं आज का नागरिक है। 1971 में अभाविप ने अपना यह मौलिक प्रतिपादन देश के सम्मुख प्रस्तुत किया। यह प्रतिपादन एक लुभावना नारा नहीं अपितु परिषद् की स्थापना से तब तक के उसके चिंतन, अध्ययन एवं विश्लेषण का परिणाम था जिसे एक खोज, (Discovery) कहना उपयुक्त होगा।

परिषद् के इस प्रतिपादन से पूर्व देश में प्रायः यही कहा

जाता था कि छात्र कल का नागरिक है। इस कथन की एक विशिष्ट पार्श्वभूमि थी। भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था गुरुकुल प्रथा पर आधारित थी। इस व्यवस्था में विद्यार्थी कई वर्षों तक गुरुकुल में रहता था तथा चौबीसों घंटे विविध प्रकार के अध्ययन में रत रहता था। उसकी पढ़ाई की आर्थिक व्यवस्था राज्य अथवा समाज करता था। विद्यार्थियों को परिवारों तथा प्रतिदिन की सामाजिक हलचलों से दूर गुरुकुलों में इसलिए भेजा जाता था ताकि परिवारों अथवा समाज द्वारा झेली जा रही कठिनाइयों, दबावों व तनावों से वे अप्रभावित रहें एवं उनके अध्ययन में व्यवधान न आये। संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था ऐसी थी जिसमें विद्यार्थी समाज द्वारा प्रदत्त एक सुरक्षित वातावरण में अध्ययनरत रहता था और उससे यह अपेक्षा होती थी कि पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् वह अपना नागरिक जीवन प्रारम्भ करे।

स्वाधीनता प्राप्ति पश्चात् के भारत में शिक्षा व्यवस्था में काफी परिवर्तन हो चुका था। न तो विद्यार्थी गुरुकुलों में पढ़ रहा था और न ही उसे पहले जैसी सुरक्षा प्राप्त थी। वह परिवार में रहकर दिन के कुछ घंटों और वर्ष के कुछ दिनों-महीनों के लिए पढ़ने जाता था। पढ़ाई हेतु राज्य अथवा समाज उसकी पूरी व्यवस्था नहीं करता था। अन्य परिवारजनों की तरह समाज में व्याप्त आर्थिक सामाजिक विषमता से वह भी प्रभावित होता था तथा परिवार में रहते हुए वह पारिवारिक व सामाजिक कठिनाइयों, दबावों व तनावों में सहभागी भी बनता था। शिक्षा व्यवस्था में आये गुणात्मक परिवर्तन के कारण विद्यार्थी के लिये विद्याध्ययन उसके जीवन-संघर्ष का प्रथम चरण मात्र था।

### युवाओं का समुदाय

स्वाधीन भारत में विश्वविद्यालयीन शिक्षा पद्धति में बड़ी मात्रा में विद्यार्थी उच्च शिक्षा की ओर आकर्षित हुए तथा बड़ी संख्या में महाविद्यालय व विश्वविद्यालय खोले गये। कुछ ऐसा ही अन्य देशों में भी हुआ। भारत के समान उन देशों में भी बड़ी संख्या में विद्यार्थी उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश पा रहे थे। इसलिये यह वैश्विक अनुभव आने लगा कि विद्यार्थी समुदाय के वर्गीय चरित्र में परिवर्तन हो गया तथा वह विद्यार्जन करने वालों की अपेक्षा 'युवाओं का समुदाय' अधिक बन गया।

बाद में चलकर तो 18 वर्ष पर मताधिकार का कानून भी देश में बना जिसका अर्थ था कि उस आयु का युवा एवं विद्यार्थी राजनीति में रुचि लेने तथा जनप्रतिनिधि व सरकार चुनने के नागरिक के एक महत्वपूर्ण कर्तव्य को निभाने में सक्षम हो गया था।

—राजकुमार भाटिया



## National Executive council meeting held at Amritsar

The meeting of the ABVP National Executive Council (NEC) was held at Amritsar (Punjab) from 25 to 28 May 2001. Total 180 members out of 250 attended the baithak, which was presided over by National President Shri. Dineshanand Goswami.

The decisions of the NEC and the brief report of the baithak are as below :

- Special Reports of some activities such as successful educational agitations in Jammu-Kashmir, Andhra Pradesh; SEIL tour of Dec 2000- Jan. 2001; Scheduled Tribe Students' Conference (Uttaranchal); Ayurved Students' Workshop (Vidarbha); Agriculture Students' Varg (Vidarbha); Internet Library Work (West U. P.), Earth quake relief activities (Gujarat) and Child-trafficking in A. P., etc. were given in the baithak.
- Discussions were held on the present situation of higher education, present national scene, Campus Culture and Campus Work, our role in university student unions, the activities of SIMI.
- SIMI (Students Islamic Movement of India), a fundamentalist organisation which is working against the nationalist interest of India, has spread its activity in many states. Their leaders are spitting venom against nation and nationalism. SIMI's involvement in riots and its connection with ISI have also come to light. Against this background, ABVP has demanded a ban on SIMI.
- Review of Organisational activity and Review of Programmes during the year took place. Apart from this, review and discussion were held on Girls Work, work among S.T. (Vanvasi) students, Technical Education

Students (TSVP) work, SFD (Students for Development) etc.

- \* The 47th National Conference of ABVP will be held at Guwahati (Assam), the gateway to north-east Bharat, on **30th Nov, 1st & 2nd Dec 2001**. Prominent, selected workers-around 1000 - are expected in this conference. More details will be intimated in the days to come.
- \* Special Thrust points for the year are Education and National Security. However, other thrust points Swadeshi, Developmental Activity and Systemic Change (Vyavastha Parivartan) will be continued.
- \* Five resolutions were adopted by the NEC :
  - i) The Fee-structure in Higher Education.
  - ii) The Epidemic of Corruption.
  - iii) The Present National Economic Crisis.
  - iv) Call for Review of Education Policy.
  - v) The Threat of Islamic Terrorism before National Security.

### *Educational campaign*

It has decided that a well-planned and effective Educational campaign be conducted during the current academic year (2001-2002). The campaign will focus upon the redressal of various problems of higher education in provinces; our stand on new trends/issues in higher education; our demands for educational change; educational policy etc. Each province is required to plan its campaign. As a part of this campaign the following will be taken up:

- A **National Workshop on Education** will be conducted for two days in Mumbai on 30 Sept. & 1st Oct. 2001. Details of the workshop will be sent to provinces in due course.



- The all India survey of Fee-structure to be completed in all the states before 30th June 2001.
- Study-reports on various educational issues as given to provinces-to be prepared by Aug. 5, 2001.

## ABVP at a glance

### Organisational :

Membership	9,52,450 (2,37,420 girl-members included)
Districts	536
Units	1591
Contacts	1519
Total	3110
Vistar Kendras	597

### Programmes :

#### Social Equality Day( Dec. 6<sup>th</sup> 2000) :

Places - 392                      Participation - 28,212

#### Yuva Divas (January 12<sup>th</sup>, 2001) :

Places - 941                      Participation - 1,47,415

Chetavani Divas(January 24<sup>th</sup>): 296 Places

#### Tree plantation :

Prant - 6                      Places - 57                      saplings - 19352

### Projects :

106 places                      154 projects.

\*\*\*\*\*

## Greater Nagaland is Unacceptable

The panicky in Manipur which led to the unfortunate death of 14 persons- mostly students in various violent incidents protesting the extension of ceasefire with NSCN (IM) by the Government of India without territorial limits has deeply hurt the Akhil Bhartiya Vidyarthi Parishad.

ABVP feels that the sentiments of Manipuri people have been hurt and hence it is natural for them to consider the central government's decision detrimental to the security and integrity of Manipur. The very idea of Greater Nagaland and demand for the same are totally unacceptable, ABVP is of opinion that this demand is a part of wider conspiracy by antinational elements and therefore strongly deplores the same.

ABVP also opposes the extension of ceasefire with NSCN(IM) in the territories of Manipur and other north-eastern states, as it would mean indirectly permitting NSCN(IM) to conduct its activities in those areas.

ABVP demands to the Government of India especially the Hon'ble Prime Minister, to review the ceasefire immediately and even if it is continued the same should not be extended beyond the territorial limits of Nagaland.

ABVP cautions the agitating people of Manipur as well as the Govt. of India about the possibility of antinational and separatist elements taking advantage of this agitation. In view of this, ABVP appeals to all concerned to tackle this carefully and successfully.

There is no room for violence in democratic setup. So ABVP urges upon the people of Manipur especially the students and youth to conduct their agitation with democratic norms and in a nonviolent way.

ABVP has always been with the people of Manipur in the just cause of development, prosperity and their rightful interests. ABVP expresses its grave concern and anguish over the tense and deteriorating situation in Manipur.

( A statement made by Sh. Atul Kothari, General secretary, ABVP)



## कश्मीर- एक सिंहावलोकन

कश्मीर का सौन्दर्य अवर्णनीय है, अनुपम है। नूरजहाँ से लेकर सर फ्रांसिस और थॉमस मूर तक ने उसका वर्णन अपने शब्दों में किया है। पृथ्वी पर स्वर्ग जैसा सम्बोधन कश्मीर को प्राप्त हुआ है। न केवल इसका प्राकृतिक सौन्दर्य अपितु स्थापत्य, अध्यात्म और साहित्य के क्षेत्र में यह बेजोड़ है।

उपरोक्त विशेषताओं के बाद भी एक विशिष्ट भौगोलिक और सामाजिक स्थिति के कारण कश्मीर को ऐतिहासिक कालक्रम में निरंतर ऐसी परिस्थितियों से गुजरना पड़ा है जो त्रासद हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार कश्मीर घाटी के स्थान पर पहले सतीसर नामक एक विशाल झील थी जहाँ अनेक यक्ष, नाग और पिशाच आदि रहते थे। जलदेव नामक भयानक असुर इनका राजा था। ब्रह्मा के पौत्र तथा मारीच के पुत्र कश्यप, जो स्वयं भी एक बड़े ऋषि थे, की सुदीर्घ तपस्या के पश्चात देवता प्रसन्न हुए और देवी शारिका एक पक्षी का रूप धारण कर अपनी चोंच में एक शिला दबाये हुए प्रकट हुई और वह शिला उस असुर के ऊपर गिरा दी। वह शिला ही अब हरि पर्वत है। इस घटना के बाद ही बारामूला के निकट एक छिद्र में होकर झील का सारा पानी पृथ्वी के अंदर समा गया। वह भूमि, जो जल के अंदर से निकली वह कश्यप ऋषि के नाम पर कश्मीर कहलाई। कश्यप ऋषि ने मैदानी भाग के निवासियों को वहीं निवास करने के लिये आमंत्रित किया। वे लोग बसंत ऋतु के प्रारंभ होने पर कश्मीर में आ जाते थे तथा शीतकाल प्रारंभ होने पर अपने स्थान पर वापस लौट जाते थे।

कश्मीर का इतिहास अनुमानतः ईसा से पाँच हजार वर्ष पुराना है। जन श्रुति के अनुसार राम चंद्र पहले राजा थे जिन्होंने कश्मीर को अपनी राजधानी बनाया। दयाकरण और उसके 55 वंशजों द्वारा छः सौ वर्षों तक राज्य करने के पश्चात गोनन्द प्रथम वहाँ का राजा बना जो जरासंध का रिश्तेदार था। श्रीकृष्ण से युद्ध के समय वह

जरासंध की सहायता के लिये पहुँचा परन्तु मथुरा के निकट उसे रोक दिया गया।

गोनन्द के पुत्र दामोदर प्रथम ने भी गांधार की राजकुमारी के स्वयंवर के समय श्रीकृष्ण से युद्ध किया परन्तु मारा गया। श्रीकृष्ण ने उसकी गर्भवती रानी यशोवती को राज्य सौंपा। उसके पुत्र का नाम गोनन्द द्वितीय रखा गया। महाभारत के युद्ध के समय अल्पायु होने के कारण किसी भी पक्ष द्वारा उसे युद्ध में भाग लेने के लिये आमंत्रित नहीं किया गया।

3000 ई. पू. के लगभग राजा रामदेव नामक प्रसिद्ध सम्राट हुए। कहा जाता है कि उसने पाँच सौ राजाओं को युद्ध में पराजित किया था तथा उसके राज्य की सीमायें बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत थीं।

ईसा से 250 वर्ष पूर्व अशोक नामक राजा के समय बौद्ध धर्म ने कश्मीर में प्रवेश किया। उसका पुत्र जालुका शिव का उपासक था। वह एक वीर शासक था और उसने अपनी सीमाओं का विस्तार कंधार से कन्नौज तक किया। कुषाण राज कनिष्क के काल के विषय में भी विभिन्न विद्वानों में मतभेद हैं परन्तु यह प्रायः ईसा पश्चात पहली-दूसरी शताब्दी में उठरता है। प्रसिद्ध बोधिसत्व नागार्जुन बौद्ध आस्था वाले इस सम्राट के समकालीन थे तथा हरवान में निवास करते थे। बाद के राजाओं में अभिमन्यु, गोनन्द तृतीय, विभीषण प्रथम, इंद्रजीत, रावण, विभीषण द्वितीय, नर, उत्पलाक्ष, हिरण्याक्ष, हिरण्यकुल व वसुकुल आदि का उल्लेख मिलता है।

वसुकुल के पुत्र मिहिरकुल ने लगभग 515 ई. में राज्य प्राप्त किया। शैव मतावलम्बी मिहिरकुल क्रूरतम राजाओं में से एक था। एक अन्य विख्यात सम्राट ललितादित्य (611-736) हुआ। अपने विजय अभियान पर निकलने के पश्चात वह बारह वर्ष बाद राजधानी कश्मीर वापस लौटा। इस बीच उसने कन्नौज, पंजाब के अतिरिक्त तिब्बत, बदकशां तथा पीकिंग पर भी विजय प्राप्त की। बाद में वह तुर्किस्तान की ओर बढ़ा तथा



सात वर्षों तक राज्य करने के पश्चात वहीं उसकी मृत्यु हो गई।

1015 व 1021 ई. में महमूद गजनवी ने कश्मीर पर विशाल सेना के साथ लूट के इरादे से आक्रमण किया परन्तु विपरीत प्राकृतिक परिस्थितियों ने उसे रूख मोड़ने पर बाध्य कर दिया।

राजा सिंहदेव (1215-1325) के शासन काल में प्रसिद्ध संत फर शाह का पौत्र शाहमीर, तिब्बत का युवराज रेचन शाह, जिसके चाचा ने उसकी गद्दी छीन ली थी, तथा दर्दिस्तान से युद्ध में पराजित होकर वहीं का राजा लंकर चक भाग कर कश्मीर आये और राजा सिंहदेव ने उन्हें अपने राज्य में न केवल शरण दी बल्कि जागीरें भी प्रदान कीं। 1332 में चंगेज खान के वंशज जुल्फी कादर खान ने कश्मीर पर आक्रमण किया। वह तुर्किस्तान से अपने साथ 70,000 घुड़सवार सैनिकों की फौज लेकर आया था। भयंकर तबाही मचाने के बाद लूट के माल के साथ 50,000 ब्राह्मणों को गुजाम बनाकर अपने साथ ले गया परन्तु देवसर नामक स्थान पर भयंकर हिम-झंझावात में फंसकर वे सभी मारे गये।

जुल्फी कादर खान को रोकने के लिये राजा सिंहदेव किश्तवाड़ की ओर गये तथा उनके महामंत्री गगनगीर की ओर आगे बढ़े। शत्रु के जाने के बाद रामचंद वापस आये और उन्होंने स्वयं को राजा घोषित कर दिया। कुछ ही समय पश्चात रेचन शाह तथा शाह मीर ने मिल कर षड्यंत्र पूर्वक सोते में उनकी हत्या कर दी। रेचन शाह राजा बना और उसने रामचंद की पुत्री कूटारानी से विवाह किया।

हिन्दुओं द्वारा उसके प्रति प्रदर्शित घृणापूर्ण व्यवहार से क्षुब्ध हो कर उसने निश्चय किया कि अगले दिन प्रातः वह जिस पहले व्यक्ति को देखेगा, उसी का धर्म स्वीकार कर लेगा। अगले दिन प्रातः उसने सबसे पहले बुलबुल शाह नामक मुस्लिम व्यक्ति को देखा और इस्लाम स्वीकार किया तथा सद्र-उद-दीन नाम धारण किया। बाद में उसने हिन्दुओं का जबरदस्त उत्पीड़न किया और उन्हें समाप्त करने का प्रयास किया।

सिकंदर बुतशिकन (1394-1417) कश्मीर के मुस्लिम शासकों में अपनी क्रूरता के लिये जाना जाता है। हिन्दुओं को प्रताड़ित करना और मंदिरों को तोड़ना उसका एकमात्र लक्ष्य था। उसने कश्मीरी ब्राह्मणों का भयंकर कत्ले-आम कराया और उनके सात मन जनेऊ एकत्रित कर जलाये। गणेशबल, बिजबिहारा, अवन्तीपुर तथा विख्यात मार्तण्ड मंदिर को भी उसने क्षतिग्रस्त किया। उसके बेटे अली शाह के राज्य में सभी सुविधायें केवल मुस्लिमों को ही उपलब्ध थीं। उसके शासन काल में एक समय ऐसा भी आया जब कश्मीरी पंडितों की संख्या सिमटकर केवल ग्यारह परिवार तक ही रह गई।

1423 ई. में जैनुल आबिदीन ने सत्ता संभाली और पचास वर्ष तक शांतिपूर्वक राज्य किया। उसके राज्य में हिन्दुओं को न केवल कुछ सुविधायें प्राप्त हुई अपितु उन्हें दरबार में भी स्थान प्राप्त हुआ। सुल्तान के भयंकर बीमार होने पर शरी भट नामक एक हिन्दू ने उसका उपचार कर उसे स्वस्थ किया। पुरस्कार स्वरूप उसने अपने लिये कोई भी आर्थिक सहायता लेने से इनकार करते हुए हिन्दुओं पर से जजिया कर समाप्त करने की अपील की जिसे सुल्तान ने स्वीकार किया। उसके शासन काल में ही कश्मीर में प्रथम बार कागज की लुगदी के उपयोग तथा सेब और नाशपाती का उत्पादन प्रारंभ हुआ।

निर्माण कार्य में भी उसकी रूचि थी। उसने एक नहर का निर्माण कराया जिसके ऊपर दोनों सिरों को जोड़ने वाले सात पुलों का निर्माण किया गया। नौशेरा नामक नगर में उसने एक भव्य और विशाल भवन का निर्माण कराया जिसमें बारह मंजिलें थीं। प्रत्येक मंजिल में पचास कमरे थे तथा एक-एक कमरा इतना विशाल था कि उनमें एक बार में पौंच सौ लोग आ सकते थे। इस भवन को जैनादाब नाम दिया गया। जैनागीर, जैनापुर, जैनाकूट, जैनाबाजार और जैनालंक भी उसकी याद दिलाते हैं। फतह शाह ने राजा बनने (1481) के पश्चात 24,000 ब्राह्मण परिवारों को इस्लाम स्वीकार कराया। इसी काल खंड में नौ हजार हिन्दुओं की मृत्यु हरमुख गंगा की बाढ़ में हुई।

—आशुतोष



# *To keep vigilant and alert*

## ABVP calls upon the patriotic Bharatiyas

ABVP National Executive Council Meeting which took place from 25 – 28<sup>th</sup> May 2001 at Amritsar passed five resolutions regarding fee structure in higher education, corruption, the national economic crisis, review of education policy and the threat of Islamic terrorism to national security.

The first resolution demanded that in deciding the fee structure of our educational institutions the social and economic conditions of our country should be considered and the principle that education is a subject of service and not of commerce should be followed.

Parity should be established in admission fees, tuition and examination fees and the fees charged under a particular head must be utilized for that purpose only. Prices of application forms, prospectuses etc. should not be beyond the reach of the average student and arbitrary fees charged in self-financing colleges, 'autonomous' colleges etc. should be checked. ABVP demands that 6% of the GDP should be provided to education and both central govts. and state govts. should not reduce allocations on education rather it should be ensured that govt. colleges are provided with adequate facilities.

The second resolution stated that the recent Tehalka revelations have exposed the blackened faces of important people in both the government and the army and has pointed to the need for a nationwide decisive battle against corruption. Many scams during the 53 years of independence have been reported like the Bofors issue, fodder scam, share scams, bribing of MPs etc. but very few have been appropriately punished. Today's political arena has become a synonym for

corruption and what is happening now is not corruption and criminalisation of politics but politicization of criminals. Honest politicians and bureaucrats are outnumbered by the corrupt and the time has come to attack the roots of corruption. Thus there is a need to initiate a decisive movement by ABVP against corruption and also by maintaining public pressure. ABVP demands that declaration of assets should be compulsory for elected representatives and bureaucrats, Lokpal bill should be passed immediately and right of recall should be provided for. ABVP reasserts that the trident of mass education, mass organisation and mass agitation will be sharpened in the coming days.

Looking at the present economic scenario, with the lifting of quantitative restrictions on 715 items, the agricultural, industrial as well as the entire economic system has received a severe jolt. MNCs have now turned their eyes towards the agricultural sector which threatens our foodgrains production, distribution and security. Due to lesser subsidies in agriculture as compared to developed European countries Indian agricultural products are finding it difficult to survive in markets when faced with low priced imported agricultural products. Many domestic industries like the tea industry of Darjeeling, coconut based industries of Kerala, Tamilnadu and Andhra, etc. have reached bankruptcy. Due to flooding of cheap commodities in the market by MNCs, employment generating small scale and other domestic industries are closing down or falling sick and lakhs of people are losing their jobs. In this situation ABVP feels that India should first go in for internal liberalization followed later by global liberalization. ABVP also calls upon the



student community to remain vigilant and watchful on economic policies and to follow the Swadeshi spirit in their daily life.

The fourth resolution says that there is a need for changes in the national educational policy in keeping with the needs of changing times. A recent document titled "A Policy Framework on Educational Reforms" prepared by industrialists Mukesh Ambani and Kumaramangalam Birla was submitted to the Prime Minister. This document naturally reflects the attitude of the industry and trade towards education. While a fresh look at our educational policy is necessary in the wake of revolutionary developments in IT and globalisation and also while private initiative in education has an important role and needs to be encouraged, effective steps should be taken to prevent commercialization of education. New opportunities provided by IT has to be taken advantage of if the potentialities of our young people have to be fused together and we can become effective players at the global level.

But excessive importance should not be given to IT at the expense of other subjects like humanities, language, literature, basic sciences, etc. The self-proclaimed secularists and leftists who have dominated the academic field have presented a distorted view of our history and culture. These people have alienated themselves from national roots and have tried to create an inferiority complex among our young generation. They are now crying hoarse at attempts to present a nationalist view of history. ABVP welcomes the initiatives taken by the government in this regard and calls upon it to forge ahead treating the leftist allegations with the contempt they deserve.

Finally, the NEC expressed grave concern at the spreading tentacles of the Islamic fundamentalist and terrorist organisations in the country and the attempts of the ISI to break our country. The murderous attacks on both civilians and security personnel are taking place not only in Jammu & Kashmir but in Kerala, Tamil Nadu, Andhra Pradesh, Karnataka, North-East, etc. Our film

industry, in the trap of Islamic fundamentalists, is covertly attacking our cultural heritage.

SIMI has spread its activities in UP, Maharashtra and many other states. The recent Kanpur riots were carried out by SIMI. ABVP demands the immediate arrest of the SIMI leaders, smashing of its activities and ban on the organisation.

Bangladeshi infiltration to Bharat has crossed 1.7 crore and is still continuing. The demographic composition of Assam and West Bengal has got disturbed, crime has increased and communal tension has mounted. Infiltrators have become a decisive factor in many constituencies and masjids and madrasas are openly used at many places for anti-national activities.

ABVP demands that the IMDT of Assam which is proving to be a boon for intruders be immediately repealed and the idea of providing work permits be dropped immediately. Regarding the killing and mutilation of our BSF jawans by Bangladesh in Pyrdiwah, ABVP believes that the Indian public's nationalist sentiments have been deeply hurt by the cold and formal reaction of the government. Strong military action followed by talks would have been better diplomacy. Security and intelligence along the border should be strengthened and barbed wire fencing should be completed on a war footing.

Terrorists carrying out anti-Bharat activities from foreign countries like Nepal should also be noted along with recent oppressions against the Hindus in Afghanistan as examples of challenges thrown to Bharat. The NEC of ABVP demanded that a solid work plan should be prepared by the govt. for Bharat's internal and border security recognizing the threats of Islamic terrorism and taking on challenges posed by them. The organization also calls upon the patriotic bharatiyas to keep vigilant and alert eyes on the incidences taking place around them.

(A report by Raviranjana Sen)



## पहली बार

### अंटार्कटिका पर पहली भारतीय महिला

डॉ. कंवल विल्कू बर्फीले अंटार्कटिका द्वीप स्थित भारतीय अनुसंधान स्टेशन 'मैत्री' पर जाने वाली पहली भारतीय महिला हैं। बर्फ के इस रेगिस्तान में उन्होंने 472 दिन बिताये।

अक्टूबर 1999 में अंटार्कटिका गये 19वें अंटार्कटिका मिशन के 46 सदस्यीय अनुसंधान दल में चिकित्सा अधिकारी के रूप में शामिल की गई श्रीमती विल्कू को केवल चार दिन पहले वही जाने के बारे में बताया गया।

बर्फीली हवाओं और अकेलेपन का सामना करने के बाद भी 53 वर्षीया विल्कू का हौसला कम नहीं हुआ है और अबसर मिलने पर वे एक बार पुनः वही जाना चाहती हैं। 1948 में शिमला में जन्मी डॉ. कंवल विल्कू के पति सैन्य अधिकारी हैं और उनके दो बच्चे हैं।

### पंचायत अध्यक्ष को वापस बुलाया

मध्यप्रदेश के शहडोल जिले में अनूपपुर नगर पंचायत के मतदाताओं ने अपने द्वारा ही निर्वाचित पंचायत अध्यक्ष श्रीमती पल्लविका पटेल को पद से हटा दिया है। भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में यह अपने प्रकार की पहली घटना है।

उल्लेखनीय है कि राज्य में पंचायत के लिये प्रत्यक्ष मतदान से निर्वाचित हुए महापौर, अध्यक्ष व सरपंच को वापस बुलाने का अधिकार मतदाताओं को प्राप्त है। अपने निर्वाचित प्रतिनिधि की अकर्मण्यता से क्षुब्ध मतदाताओं की मींग पर उन्हें हटाये जाने के प्रश्न को लेकर मतदान हुआ जिसमें तीन हजार से ज्यादा लोगों ने उन्हें हटाये जाने तथा डेढ़ हजार से अधिक लोगों ने उन्हें बनाये रखने के पक्ष में मतदान किया। इस प्रक्रिया को श्रीमती पटेल ने उच्च न्यायालय में चुनौती देने हेतु याचिका दाखिल की परन्तु न्यायालय ने उसे खारिज कर दिया।

पिछले कुछ समय से मध्य प्रदेश के मतदाता लोकतंत्र में कुछ नये प्रयोगों को अंजाम दे रहे हैं। स्थानीय निकाय के चुनावों के साथ ही विधानसभा चुनावों में भी किन्नरों को जनप्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित कर गतवर्ष उन्होंने पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया था। जनप्रतिनिधि को पदच्युत करने का फैसला सुनाकर वही के मतदाताओं ने पुनः एक बार इतिहास रचा है। यह इसलिये भी महत्वपूर्ण है कि वापस बुलाया गया प्रतिनिधि एक महिला है।

### तालाबों को जीवन

भारत में कभी जनजीवन का आधार रहे तालाब आज खुद अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। निरन्तर बढ़ते जल संकट के कारण सरकारों और गैर सरकारी संस्थाओं का भी ध्यान इस ओर गया है और उन्हें बचाने के लिये प्रयत्न भी शुरू हुए हैं।

प्रदूषण के कारण दम तोड़ रहे तालाबों को जीवन प्रदान करने की एक जैविक युक्ति प्रकाश में आई है तथा एशिया में पहली बार महाराष्ट्र के ठाणे शहर के कचराली तालाब में यह प्रयोग किया गया है। इस तालाब में कार्बन और शैवाल होने के साथ-साथ टनों कचरा भी फेंका जाता था जिसके कारण यह तालाब समाप्ति के कगार पर था।

कचराली तालाब को साफ करने का काम बोकार्ड नामक कंपनी ने एक वर्ष पूर्व हाथ में लिया। सफाई अभियान के अंतर्गत तालाब में चार टन जैविक उत्पाद छोड़ा गया। पानी में बैक्टीरिया छोड़कर कीट जल प्राणियों को साफ किया गया तथा पानी में फास्फोरस की मात्रा कम करने के लिये 11 डिफ्यूजन यंत्र लगाये गये हैं जो पानी में बुलबुले के रूप में शुद्ध ऑक्सीजन छोड़ते हैं।

पानी में बैक्टीरिया का छिड़काव हर चार माह बाद होता है जिसके परिणामस्वरूप गत एक वर्ष में सम्पूर्ण जलपणी समाप्त हो चुकी है तथा साठ प्रतिशत से अधिक पानी शुद्ध हो गया है। इस पूरे अभियान पर 46 लाख रुपये का व्यय आया है। इस सफलता से उत्साहित होकर आस-पास के अनेक तालाबों को भी इस पद्धति से पुनर्जीवित करने की योजना बन रही है।



## Lagaan Vs Gadar

*Lagaan* starts with a moving scene: the hero (Aamir Khan) is trying to save a deer from being slaughtered by an 'evil' British officer (who looks more Indian than English and speaks a caricatured Hindi). Very touching, but the reality is somehow different: Wildlife in India is being slaughtered since Independence at such an alarming rate that soon there will be nothing left; some Bollywood actors are known to have a weakness to go on a hunting trip or two, witness the other Khans, Salman, and Saif Ali, who were caught killing innocent deer in Rajasthan.

*Lagaan* uses cricket as a metaphor: Indians can be better than the British at their own games; and cricket can be used as war, a sort of a Gandhian non-violent weapon. But both metaphors are untruthful.

Firstly, cricket is a game which is totally unsuited for Indian conditions, as it is meant to be performed in cool weather and on green meadows.

Secondly, cricket in colonial India was played only by maharajas and some of the upper classes who wanted to copy the British, certainly not by 19th century Kutch villagers.

And lastly, if the British had meant — in the same way that Macaulay created generations of Indians, who are brown in their skins but Western in their mind — to kill all other games in India, including indigenous ones, by imposing cricket (have you noticed that Indians are only good at games left by the colonisers: cricket, lawn tennis, hockey, polo...), they have been highly successful.

The adulatory, mad, irrational love for cricket that Indians possess has ensured that not only most Indians are merely armchair sportsmen, but that cricket has 'vampirised' all other sports in India, by attracting to itself all sponsorship and media interest. As a result, of the two 'giants' of Asia — China and India — the former is one of the top sporting nations in the world and the latter ranks at the bottom of most sports and

won only one bronze medal in the last Olympics.

One should also add that cricket's 'fair play', supposedly left by the British, is a hoax: Pakistan may want to play cricket with India but that did not stop Islamabad to send its infiltrators into Kargil, while pretending to be sporty. Some cricketers are spoilt brats making millions of rupees in endorsements, whereas more deserving sportsmen, such as runners, live on a pittance.

On top of that, in *Lagaan*, there is too much light on the actors' faces, the Indian costumes are all wrong: women of 19th century Kutch did not wear blouses; Aamir Khan's hair looks perpetually artfully undone, as if he is wearing a wig; there is also a lot of overacting. If the British were as stupid and caricatural as shown in the film, they certainly would not have been able to keep India — and a huge empire all over the world — for so long. There is no doubt that the English colonisers were devious and cruel — but they did it in a much cleverer way than depicted in *Lagaan*, by pitting Muslims against Hindus, Christians against Hindus, Sikhs against Hindus, Hindus against Hindus...

Yes, they did impoverish India: according to British records, one million Indians died of famine between 1800 and 1825, 4 million between 1825 and 1850, 5 million between 1850 and 1875 and 15 million between 1875 and 1900. Thus 25 million Indians died in 100 years! (Since Independence, there has been no such famines, a record of which India should be proud.)

But the famines did not happen because the British 'overtaxed' farmers, as hinted by *Lagaan*, it was done in a roundabout manner, by breaking down the indigenous crop patterns of India and substituting it with products which England needed, such as cotton. Finally, *Lagaan* strives to be very 'secular': Hindus and Muslims live harmoniously in this Kutch village (which looks more like a Taj hotel recreation of a khadi



village than a real 19th century Gujarati hamlet), and it is the crippled Harijan, who indirectly helps the 'Indian' team beat the British. But again, does this correspond to the reality?

By contrast, *Gadar* is a wonderful film. The theme is real: the Partition of India which cost so much blood on both sides and has left wounds which are so deep, two or three generations later, that I could feel the anguish of my wife, whose Sikh father fled Rawalpindi hiding in a trunk in a train that barely made it to Delhi.

*Gadar* has an eye for detail; the costumes are right, the cars and trucks are vintage, the lighting is perfect. On top of that the acting is superb: for once, Sunny Deol does not over-perform in great outbursts of pseudo-violence, but is sober, restrained and can be both wonderfully touching and angry, portraying single-handedly the terrible anguish of Partition.

Amisha Patel renders beautifully the extraordinary Indian-ness of the Indian woman (the nuptial scene is both sensuous and leaves a lot to the imagination), and re-enacts the tearing apart that many Indian men and women, be them Muslims or Hindus, felt in themselves in 1947. Split between their religion and nationality, their attachment to India and the mirage that was Pakistan.

Finally, contrary to *Lagaan*, where you are treated with more than two hours of cricket of which the outcome is highly predictable, *Gadar* has an intricate scenario with twists and suspense and we leave it to the reader to discover this magnificent film for herself/himself.

Unfortunately, of the two films, there is no doubt that *Lagaan* (which is at the moment breaking all attendance records) will reap more popular success: it appeals more to ordinary sentiments, touches a certain jingoistic nerve in people and uses cricket the vampire to tap the masses. But the truth is that not only does the Indian team not beat England (nor even Zimbabwe!) very often, but that the British do not even need to beat India in cricket. By having imposed upon India cricket, a game not suited for Indian conditions,

they won anyway!

They also won because they managed, better than Aurangzeb even, to divide India. By attacking cinema halls in Delhi, Ahmedabad and Lucknow, certain Muslims have shown, once more, that they are still resorting to the old tactics of the Mughals, regardless of the genuineness of the issue.

*Gadar* is a non-partisan film, as it treats the Hindu-Muslim problem in a non-judgmental way; and if the heroine does *namaaz* with her nail polish on, it is a very small matter, that does not warrant riots.

On July 14, Atal Bihari Vajpayee and Pervez Musharraf will sit down in Agra and try to hammer down their differences — which have only one name: Kashmir. But they should remember Sri Aurobindo's words in 1947: 'The old communal division into Hindu and Muslim seems to have hardened into the figure of a permanent division of the country. It is hoped that the nation will not accept the settled fact as for ever settled, or as anything more than a temporary expedient. For if it lasts, India may be seriously weakened, even crippled: civil strife may remain always possible; possible even a new invasion and foreign conquest. The Partition of the country must go...'

Unfortunately, since Independence, all Indian and Pakistan leaders have thought that Kashmir can be solved separately from the other problems. But the truth, as shown in *Gadar*, is that Kashmir, Ayodhya, Kargil, the unrest of the 120 million Muslims, all spring from that great gaping wound that is Partition, which the British wilfully and consciously left behind as a parting gift (remember the words of Churchill when he learnt of the chaos following Partition: 'At last, we've had the last word').

As long as Pakistanis and Indians do not become conscious of the need to reunite, in whatever form, under whichever framework, they will be other Ayodhyas or Kargils. Kashmir will remain a festering and dangerous wound in the face of South Asia.

—Francois Gautier





## प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार - २००१

स्व. यशवंत वासुदेव केलकर, स्वातंत्र्योत्तर भारत के पुनर्निर्माण के स्वप्न दृष्टा रूपि जिन्होंने इस देश के छात्र आन्दोलन को नये आयाम देने का महत्कार्य न केवल संकल्प के रूप में धारण किया अपितु अपने विलक्षण संगठन कौशल एवं निरन्तर अध्यवसाय से उसे साकार कर दिखाया।

२५ अप्रैल १९२५ को महाराष्ट्र के पंढरपुर नामक स्थान में जन्मे यशवंतराव ने ७ दिसम्बर १९८७ को अपनी जीवन यात्रा पूरी की। मुंबई के नेशनल कॉलेज में अंग्रेजी के प्राध्यापक के रूप में कार्य करते हुए वे निरन्तर विद्यार्थियों के प्रेरणास्रोत बने रहे। वर्ष १९६७-६८ में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में दायित्व निर्वाह करने वाले श्री केलकर अंतरराष्ट्रीय छात्र जीवन दर्शन के संस्थापक अध्यक्ष तथा विद्यार्थी निधि के भी अध्यक्ष रहे। आपातकाल के विरुद्ध संघर्ष में उन्होंने अग्रणी भूमिका निभाई तथा १४ माह तक मीसा के अंतर्गत कारावास में रहे।

स्व. श्री यशवंतराव केलकर की पुण्य स्मृति में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद तथा विद्यार्थी निधि न्यास के संयुक्त उपक्रम के रूप में प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार की स्थापना की गई है। विभिन्न विषयों पर काम करने वाले सामाजिक कार्यकर्ताओं के सामाजिक विकास में उल्लेखनीय योगदान तथा कृतकार्यों को समाज के सम्मुख लाना एवं ऐसे कार्यकर्ताओं के प्रति समूचे युवा वर्ग की ओर से कृतज्ञता प्रकट करना इसका प्रयोजन है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष अभावपि के राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर प्रदान किया जाता है तथा प्रशस्तिपत्र, स्मृति चिन्ह एवं रु. १०,००० की राशि इसमें समाविष्ट है।

वर्ष २००१ के लिये इस पुरस्कार का विषय है भारतीय लोकसंगीत का संवर्धन एवं लोकप्रियकरण। गायन, वादन, नर्तन आदि विधाओं के माध्यम से लोकसंगीत का प्रस्तुतीकरण, देश के विभिन्न क्षेत्रों, जनजातियों, भाषाओं में प्रचलित लोकसंगीत का दृक्, श्राव्य अथवा लिखित रूपों में संकलन, सघन प्रचार एवं लोकसंगीत की रचना करने के काम में लगे युवाओं से इस पुरस्कार हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं।

### नियमावली

- पुरस्कार हेतु नामांकन व्यक्तिगत रूप से अथवा संस्था की ओर से भेजा जा सकता है। कोई अन्य व्यक्ति भी किसी के पक्ष में नामांकन भेज सकता है।
- व्यक्ति(जीवित पुरुष अथवा महिला) की आयु दि. ३१ दिसंबर २००१ को ४० वर्ष से अधिक न हो।
- नामांकन का कोई विशिष्ट प्रारूप नहीं है किंतु नामांकन के साथ निम्नांकित सूचना आवश्यक है :
  - पात्र व्यक्ति के नवीनतम पासपोर्ट आकार छायाचित्र की तीन प्रतियाँ
  - विद्यालय छोड़ने के प्रमाणपत्र की प्रमाणित प्रति या ऐसा कोई प्रमाणपत्र जिससे जन्मतिथि प्रमाणित होती हो।
  - लोकसंगीत हेतु कार्य करने की प्रेरणा आपको कैसे मिली?
  - कार्य कब और कैसे प्रारंभ हुआ?
  - भविष्य की योजना?
- नामांकन हिन्दी या अंग्रेजी में (टाइप किये अथवा पठनीय लेख में लिखे) दि. ३० सितम्बर २००१ तक श्री मिलिंद मराठे, संयोजक, प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार - २००१, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, ३, मार्बल आर्च, सेनापति बापट मार्ग, माटुंगा रोड (प.रे.), मुंबई - ४०००१६ के पते पर पहुँचना चाहिये।